नैतिक एवं संवेगात्मक विकास में मीडिया की भूमिका

संदीप कुमार*

नैतिक एवं सांवेगिक विकास सामाजिक पहलुओं से प्रभावित रहते हैं या यूँ कहें कि सामाजिक पहलू नैतिक एवं सांवेगिक विकास में भूमिका निभाते हैं तो ज़्यादा सटीक रहेगा। सामाजिक पहलुओं में मीडिया भी एक महत्वपूर्ण पहलू है जो विकास के लगभग सभी पक्षों को प्रभावित करता है। मीडिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमारे नैतिक एवं सांवेगिक विकास में अहम भूमिका निभाता है। मीडिया विशेष तौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बच्चों की ज़िंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, फिर चाहे हम कार्टून की बात करें या विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिता कार्यक्रमों की। बदलते युग ने मीडिया तक बच्चों की पहुँच को सुगम बनाया है और यही सुगमता उनके विकास में भी भूमिका निभाती है। बच्चे किस प्रकार के मीडिया से रूबरू होते हैं, यह उनके संवेगों के विकास एवं नैतिकता की समझ को प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं कुछ पक्षों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

बच्चे आज एक ऐसे युग में जीवनयापन कर रहे हैं जहाँ उनके अनुभवों में मीडिया एक मध्यस्त की भूमिका निर्वहन करता है। इस बात की पूरी संभावना है कि छोटे बच्चे किसी विशेष कार्यक्रम को देखकर डरने की प्रवृत्ति विकसित कर लें या किसी अन्य प्रकार के कार्यक्रम को देखकर संवेगों को विकसित करें। यह भी संभव है कि बच्चे किसी कार्टून पात्र को देखकर उसके साथ एक सांवेगिक संबंध स्थापित कर लें। भारतीय बच्चे आज, विशेषकर शहरी जीवन में, अधिकतर समय टेलीविज़न, मोबाईल फ़ोन या वीडियो गेम्स के साथ व्यतीत करते हैं। पाँच साल से कम आयु के बच्चे भी अपना अधिकतर समय टी.वी. को देखते हुए बिताते हैं। एकल परिवार, अभिवावकों की व्यस्तता इसके कुछ महत्वपूर्ण ज़िम्मेदार कारण हैं। इससे बढ़कर, अभिभावक ऐसा करने में गर्व भी महसूस करते हैं, लेकिन बच्चों ने क्या कुछ खोया इस पर अभिभावक विरले ही सोचते हैं। वह समय ज़्यादा दूर नहीं जब प्रत्यक्ष रूप से अंतर्क्रिया का ज़माना लद जाएगा एवं सभी कुछ तकनीकी रूप से होगा। मुझे ऐसा सोचने मात्र से भय लगता है।

लेकिन यह भी सच है की तकनीकी के आभाव में आज समाज एवं संस्कृति एवं अन्य से जुड़ी जटिलताओं को समझना कठिन है। यही कारण है कि भारतीय सरकार की आई.सी.टी. की नीति ने

* *सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली 110 021

तकनीकी के प्रयोग तथा इसकी क्षमताओं के भरपूर प्रयोग के लिए कार्ययोजनाओं की शुरुआत की है तथा विद्यालयों में इसके प्रयोग के बढ़ावे की बात की (आई.सी.टी. पर राष्ट्रीय नीति, 2012)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005 ने भी विद्यालय शिक्षा में आई.सी.टी. संबंधी पाठ्यक्रम को लागू करने की सिफ़ारिश की, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में तकनीकी कुशलता को बढ़ाना है ताकि तकनीकी समाज के सरोकारों को समझने के लिए विद्यार्थी तैयार हो सकें।

बच्चों में संवेगों एवं सामाजिक क्षमताओं का विकास एक जटिल प्रक्रिया है। समाज, समुदाय आदि में की जाने वाली प्रत्यक्ष सहभागिता उन्हें मूल्यों, नियमों, परंपराओं के साथ अंतर्क्रिया करने योग्य बनाती है, जिसके चलते बच्चे, परिवार, साथी समूह तथा वृहत् समाज के साथ जुड़े अपने प्रकार्यों को समझते, सीखते एवं विकसित करते हैं, बल्कि, उन पर नियंत्रण रखना भी सीखते हैं। इस प्रक्रिया का सीधा ताल्लुक उनकी स्वयं की अभिक्षमता, अभिवृति एवं संज्ञानात्मक योग्यताओं से भी होता है। इसी क्रम में मीडिया भी उनके समाजीकरण में एक अहम भूमिका निभाता है। टी.वी., फ़ोन, इंटरनेट जैसे साधन बच्चों को प्रचलित संस्कृति से परिचित होने के लिए द्वार प्रदान करते हैं। इस द्वार में प्रवेश करने के पश्चात् बच्चे विभिन्न पात्रों की प्रशंसा, आलोचना आदि के साथ-साथ सांवेगिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का अनुभव अपनी क्षमताओं एवं अधिरोपित समझ के दायरों में करते हैं।

इस शोध पत्र में शोधक द्वारा उन शोधों पर पुनर्विचार एवं समीक्षा करने का प्रयास किया गया है जो बच्चों के संवेगात्मक एवं सामाजिक रूप से स्वस्थ होने और मीडिया के मध्य संबंधों को देखते हैं। शुरुआत में शोधक द्वारा भावात्मक एवं संवेगात्मक विकास में मीडिया की भूमिका पर चर्चा की गई है। शोधक का प्रयास यह दर्शाना रहा कि बच्चे मीडिया के माध्यम से किस प्रकार संवेगों की प्रकृति एवं प्रकार्यों को सीखते हैं तथा इस बात पर निष्कर्षतः पहुँचा कि समानुभूति के विकास में मीडिया की क्या भूमिका है। इस बात की भी विशेष समीक्षा प्रस्तुत की गई है कि मीडिया तक लगातार पहुँच बच्चों के नैतिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करती है। इसमें यह भी दर्शाया गया है कि समाजसम्मत व्यवहार की प्रवृत्ति एवं आक्रमकता पूर्ण व्यवहार की प्रवृत्ति के विकास में मीडिया की सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों की भूमिका को बच्चों के मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ होने के सापेक्ष समझा जा सके। किस प्रकार का सुरक्षा आवरण बच्चे विकसित करें तथा अभिवावक किस प्रकार मीडिया की भूमिका को सुखकारी बनाएँ? इन्हीं प्रश्नों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

इस समीक्षा में दो प्रसंग उत्पन्न हुए। पहला, मीडिया बच्चों के विकास में नकारात्मक एवं सकारात्मक, दोनों भूमिकाएँ निभाता है। जोकि अति सरलीकृत कथन होगा। अधिकतर प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार की विषय-वस्तु से बच्चों का सामना होता है? मीडिया के कुछ पहलू बच्चों में एक प्रभावी एवं समाजसम्मत व्यवहार के

विकास में भूमिका निभा सकते हैं, जबकि कुछ अन्य इसके बिलकुल विपरीत। बच्चे क्या देखते हैं, ज़्यादा प्रभावपूर्ण होता है, बनिस्बत कितना देखते हैं।

सभी बच्चे मीडिया से समान रूप से प्रभावित नहीं होते। उदाहरण के लिए, बच्चे की आयु एवं विकासात्मक स्तर इस प्रभाव के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ परिस्थितियों में छोटे बच्चे मीडिया से ज़्यादा संदिग्ध होते हैं, जबकि कुछ में बड़े बच्चे। मीडिया की ऐसी विषय-वस्तु जो ज़्यादा जटिल एवं सांवेगिक है, उसका प्रभाव उन बच्चों पर ज़्यादा पड़ने की संभावना है, जो ज़्यादा परिष्कृत संज्ञानात्मक कौशल रखते हैं। परिवार, जाति, जेंडर एवं सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि भी मीडिया के प्रभाव पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं अर्थात् मीडिया का प्रभाव या भूमिका सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से निरपेक्ष नहीं, बल्कि सापेक्ष है।

नैतिक विकास में मीडिया की भूमिका

मीडिया की आलोचना में एक महत्वपूर्ण तर्क यह दिया जाता है कि यह नैतिकता के पतन का ज़िम्मेदार है। सामान्य अवलोकन एवं शोध इस बात के परिचायक हैं कि जिस तरह की संस्कृति टी.वी. और फ़िल्मों में दिखाई जा रही है, वह नैतिकता के मानदंडों को नीचे ले जा रही है। चिंता ज़्यादा बढ़ जाती है, जब हम देखते हैं कि बच्चे और युवा बहुत ज़्यादा समय मीडिया से संपर्क में रहते हैं। इससे बढ़कर अवांछित विषय-वस्तु तक बच्चों की पहुँच, चिंता को और ज़्यादा बढ़ा देती है। बच्चों को हिंसात्मक, वासना युक्त, चोरी, लालच जैसे अनगिनत घटनाक्रम एवं कहानियाँ, टी.वी, फ़िल्म, रिएल्टी शो, इंटरनेट आदि सब जगह मिल जाती है। बहुत कम शोध अध्ययन जो व्यावहारिक हों, इस बात को लेकर हुए हैं कि मीडिया बच्चों के नैतिक विकास से कैसे जुड़ा है? व्यापक स्तर पर शोध अध्ययन इस बात को लेकर हुए हैं कि मीडिया बच्चों के समाजसम्मत एवं समाज विरोधी व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है, लेकिन इस बात पर बहुत कम ध्यान दिया गया है कि मीडिया से बच्चे किस प्रकार के नैतिक अध्याय सीखते हैं?

बच्चों में नैतिक विकास एक पूर्वानुमानतः पथ पर होता है। जब कोई नैतिक द्वंद्व लगभग सात साल के बच्चे के समक्ष होता है, तो वह उसके परिणामों के आधार पर उसे सही या गलत मान लेता है। लेकिन परिपक्वता बढ़ने के साथ, जब वह बहु-दृष्टिकोणों को समझने लगता है तथा कार्यों के उद्देश्यों को समझ पाता है, तब उसकी नैतिक तार्किकता लचीली हो जाती है तथा 'स्वयं' से 'दूसरों' पर हस्तांतरित हो जाती है।

बी. गुंटर (1997) के अनुसार, टी.वी बच्चों के विकास के विविध पहलुओं पर प्रभाव डालता है, जिसमें उनका अच्छा व्यवहार, क्रोध, नैतिकता और स्कूल निष्पादन सम्मिलित है। डी. गोंटलेट (1995) के अनुसार, हम क्या देखते हैं, ज़्यादा महत्वपूर्ण है, बनिस्बत इसके कि हम कितना देखते हैं। टी.वी पर देखे गए कार्यक्रमों की विषय सामग्री किसी को भी सोचने और सही गलत का निर्णय लेने को प्रभावित करती है।

इस शोध अध्ययन में टी.वी देखने में अभिभावकों की भूमिका को सम्मिलित किया गया तथा यह पाया

गया कि जहाँ अभिभावकों ने बच्चों के साथ संपर्क स्थापित रखा, वहाँ बच्चों ने काल्पनिक हिंसात्मक कार्यक्रम को कम देखा तथा उच्च तार्किकता युक्त कौशलों का प्रदर्शन किया। जहाँ अभिभावकों ने नियंत्रण नहीं रखा, वहाँ नैतिक तार्किकता से जुड़े कौशलों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत निम्न स्तर का रहा।

ये शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि टी.वी. पर हिंसात्मक कार्यक्रमों को देखना बच्चों के नैतिक विकास में बाधक का काम करता है। इस उलझन पर इन शोधों ने कुछ प्रकाश डाला है। इस शोध हेतु कारण-प्रभाव के सापेक्ष बच्चों के सही-गलत के नैतिक संप्रत्ययीकरण पर टी.वी. के प्रभाव का अध्ययन किया गया। 6–14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को यादृच्छिक रूप से तीन समूहों मे बाँटा गया। एक समूह ने ऐसा कार्टून प्रोग्राम देखा जिसके पात्र आपस में बहस करते दिखाए गए और अंत में हिंसात्मक हो गए। दूसरे समूह को भी वही प्रोग्राम दिखाया गया, लेकिन अंत में हिंसा नहीं हुई, बल्कि वे अलग-अलग हो गए। तीसरे समूह को तटस्थ रखा गया। इसके बाद बच्चों को चार हिंसाप्रद कहानियों के संदर्भ में न्याय करने को कहा गया। जिन बच्चों ने हिंसात्मक प्रोग्राम देखे थे, उन्होंने हिंसा को ज़्यादा नैतिक ठहराया, बजाए उनके, जिन्होंने हिंसायुक्त प्रोग्राम नहीं देखे थे। इन्होंने अपनी प्रतिक्रियाओं में कम परिष्कृत नैतिक तार्किकता का प्रदर्शन किया। जिसको ज़्यादातर सत्ता एवं दंड से तार्किकता प्रदान की गई (उदाहरण — आपको मारना नहीं चाहिए नहीं तो आपको परेशानी होगी)। जिन बच्चों को नियंत्रित समूह में रखा गया था, बनिस्बत हिंसायुक्त चलचित्र देखने वाले बच्चों के, में हिंसा को तार्किक ठहराना ज़्यादा पाया गया। यह शोध इस बात का भी स्पष्टीकरण करता है कि थोड़े समय के लिए किया गया संपर्क भी बच्चों के द्वारा किए जाने वाले नैतिक मूल्यांकन तथा प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है।

इस मामले में किया गया दूसरा अध्ययन ज़्यादा दीर्घकालीन था। इसके तहत 20 ऐसे पूर्व प्राथमिक स्कूली बच्चों को लिया गया, जिनको 'संभालना कठिन' था तथा 20 समान उम्र के अन्य बच्चों को अध्ययन में लिया गया। सभी बच्चे दिल्ली क्षेत्र से लिए गए। दोनों ही समूहों के बच्चों का चार वर्ष की आयु में समान तरह के खेलों को खेलने का अवसर दिया गया तथा लगातार अवलोकन किया गया। अवलोकन के विश्लेषण हेतु बच्चों से पूछा गया कि वे कौन-से कार्यक्रम टी.वी. पर देखते हैं, जिसका विवरण प्रत्येक बच्चे के सापेक्ष तैयार किया गया, जिसने विश्लेषण में सहायता प्रदान की। अन्य बच्चों की अपेक्षा, 'संभालने में मुश्किल' बच्चों ने खेलों में मारने, हत्या, मृत्यु, झगड़े पर अधिक ध्यान दिया। यह खेल काफ़ी हद तक मीडिया के पात्रों एवं घटनाओं से जुड़े रहे। जैसा की ज्ञात है कि यह शोध अध्ययन दीर्घकालीन प्रकृति का है, अतः दो वर्ष तक शोध अध्ययन में संलग्नता बनाए रखी गई। अतः जो समूह हिंसाप्रद खेलों से जुड़ा रहा, ने छह साल की आयु में नैतिक तार्किकता के निम्न स्तर प्रदर्शित किए, बजाए दूसरे बच्चों के। हिंसात्मक खेल वाले बच्चों ने अन्य बच्चों की अपेक्षा दुविधा के समय में मतलबी एवं स्वयं के सुखवाद से प्रभावित होकर नैतिक निर्णय लिए तथा उद्देश्यों एवं भावनाओं के स्थान पर दंड को

अधिक महत्व दिया। हालाँकि, बच्चों की मीडिया से जुड़ी आदतों को सीधे नहीं जाँचा गया, लेकिन, उनके व्यवहार एवं प्रतिक्रियाओं में उनके द्वारा देखे गए कार्यक्रम स्पष्टतः परिलक्षित हुए।

संक्षेप में, शोध दर्शाता है कि टी.वी. पर दिखाई जाने वाली हिंसा, बच्चों को उसे न्यायसंगत ठहराने में मदद करती है। साथ ही उनकी नैतिक तार्किकता के विकास में भी बाधा का काम करती है। नायक द्वारा की गई हिंसा को ज़्यादा मज़बूती के साथ बच्चों ने दर्शाया। हालाँकि, इस प्रकार के निष्कर्ष स्थायी नहीं हो सकते, क्योंकि इस क्षेत्र में बहुत कम शोध अध्ययन उपलब्ध हैं। एक प्रयोग और एक दीर्घकालीन शोध अध्ययन के आधार पर बहुत कुछ निष्कर्षतः कहना कठिन है। यह मात्र एक झलक ही प्रस्तुत कर सकता है। यहाँ बच्चों के केवल आक्रमकता के प्रति नैतिक विचार समझे गए हैं। यहाँ नैतिकता से जुड़े कई पहलुओं, जैसे — धोखा, झूठ, चोरी आदि की तरफ़ ध्यान नहीं दिया गया है, जो एक अलग प्रकार की समझ इस विषय को दे सकता है।

संवेगात्मक विकास में मीडिया की भूमिका

बच्चों को दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने हेतु संवेगात्मक कौशलों की आवश्यकता होती है। निस्संदेह, सामाजिक अभिक्षमता के निर्माण में दूसरों के संवेगों को पहचानना एवं उनकी व्याख्या करने की योग्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मनोवैज्ञानिक एवं मीडिया के विद्वान समान रूप से मानते हैं कि स्क्रीन मीडिया बालकों के संवेगात्मक विकास में अहम भूमिका निभाती है, तो भी मीडिया के संवेगों पर पड़ने वाले प्रभावों की बनिस्बत शोधकर्ताओं ने ज़्यादा ध्यान मीडिया के प्रभावों की व्याख्या कुसमायोजन एवं असामाजिक व्यवहार के सापेक्ष ही की है।

संवेगात्मक क्षमता का पहला कौशल दूसरों के संवेगों को पहचानने की क्षमता होती है। शोध दर्शाते हैं कि पूर्व विद्यालय अवस्था के बच्चे सामान्य संवेगों, जैसे — खुशी, दु:ख, डर आदि की पहचान तथा उनमें अंतर टी.वी के पात्रों के प्राप्त अनुभवों के आधार पर करते हैं। हालाँकि, छोटे बच्चे, जटिल संवेगों को समझने एवं पहचानने में कठिनाई महसूस करते हैं। वे व्यक्तियों की बजाय चलचित्रों से ज़्यादा प्रभावित होते हैं। चाहे चलचित्रों के पात्रों की संवेगात्मकता पर ध्यान केंद्रित न करते हों। आठ-नौ वर्ष की अवस्था तक आते-आते बालक, विशेषकर लड़कियाँ पात्रों से जुड़े भावों को समझने लगती हैं। बढ़ती आयु के साथ संवेगों की जटिलता को पहचाने के साथ उसे भावात्मक तौर से समझने लगते हैं। जटिल संवेग जैसे — जलन आदि के प्रति भी समझ का विकास होने लगता है तथा बच्चे टी.वी. कार्यक्रमों के साथ वास्तविकता को जोड़कर देखना भी शुरू करते हैं। लेकिन क्या संवेगात्मक चित्रण बच्चों को संवेगों के बारे में सिखाते हैं? आश्चर्य की बात है कि इस बात के बहुत ही कम साक्ष्य उपलब्ध हैं। बेंदूरा (1977) के अनुसार अवलोकन हमारे सीखने और समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है और इसमें सामाजिक अवलोकन से लेकर मीडिया में दिखाए गए चलचित्र भी सम्मिलित हैं।

बच्चे किसी कार्यक्रम को लगातार देखने से भी संवेगों को विकसित करते हैं। जब कुछ बालकों से एक

विशेष कार्यक्रम, जिसे वह नियमित तौर पर देखते हैं, के बारे में बच्चों से पूछा गया तो उनकी प्रतिक्रियाओं में संज्ञानात्मक अंशों के बजाए भावात्मक एवं संवेगात्मक पहलू ज़्यादा प्रभावी रहा अर्थात् देखे गए सूचना प्रधान कार्यक्रमों में भी बच्चों ने संवेगों की समझ अधिक सीखी, जैसे— डर से बाहर आना, अलग-अलग भावनाओं को बताना आदि। बच्चों ने ईमानदारी, वफ़ादारी, बाँटना आदि बातों पर ज़्यादा बल दिया, ना कि, इतिहास, विज्ञान आदि पर। जेंडर भेद स्पष्ट नज़र आया, लड़कों की बजाय लड़कियों ने ज़्यादा संवेगों को सीखा तथा बातचीत में दर्शाया। यह अंतर इस बात का परिचायक है कि लड़कियाँ अधिक जुड़ाव एवं लिप्त होकर कार्यक्रमों को देखती हैं। यहाँ यह बताने की आवश्यकता है कि बच्चे शैक्षिक कार्यक्रमों की बजाय मनोरंजन कार्यक्रमों से अधिक सामाजिक संवेगात्मकता की समझ विकसित करते हैं। लेकिन इन संवेगों को वास्तविक जीवन में उतारने की आवश्यकता है।

शोध दर्शाते हैं कि टी.वी. पर देखा गया एक चित्रण भी बच्चों के वास्तविक जीवन में किसी विशेष संवेग में फेरबदल या बदलाव ला सकता है। जो इस बात को स्पष्ट करते हैं कि मीडिया संवेगों को लेकर बच्चों के स्कीमा एवं मानसिक प्रस्तुतीकरण को प्रभावित करती है। शोधों ने दर्शाया है कि हमारे मानसिक निरूपण (स्कीमेटा) अभिव्यक्ति के इशारों या सूचकों, पारिस्थितिक कारणों एवं संवेगों को दर्शाने वाले नियमों को सम्मिलित रखते हैं। बालक इन्हीं निरूपणों का प्रयोग मीडिया में देखे गए कायक्रमों की व्याख्या करने में प्रयोग करता है। साथ ही, मीडिया की विषय-वस्तु भी बच्चे के निरूपणों को प्रभावित करती है। हमारे संवेगों को लेकर क्या स्पष्टीकरण है तथा यह स्पष्टीकरण जैसे हैं, वैसे क्यों हैं? के मध्य एक प्रकार का पारस्परिक संबंध स्पष्ट नज़र आता है, जो स्पष्ट तौर पर मीडिया एवं मानसिक निरूपणों के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करता है।

अभिभावक, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बच्चों के विकास में पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे केवल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों एवं गुणों को ही नहीं, बल्कि इसके संपर्क में आने से पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को भी नियंत्रित कर सकते हैं। अभिभावक जो अपने बच्चों के साथ समाजसम्मत कार्यक्रम देखते हैं, वह बच्चों में सामाजिक व्यवहार के विकास को बढ़ाने में मदद तथा प्रोत्साहन करते हैं। देखे गए कार्यक्रमों के संदर्भ में सकारात्मक चर्चा करके एक सक्रिय मध्यस्तता भी निभाई जा सकती है। यह मध्यस्तता नैतिक चर्चाओं के माध्यम से की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि अभिभावक मीडिया के हानिकारक प्रभावों के प्रति बच्चों को जानकारी दें तथा जागरूक करें। यह जागरूकता बच्चों को इन हिंसायुक्त कार्यक्रमों के साथ निपटने में मदद कर सकती है। वह यह भी समझ पाते हैं कि काल्पनिक कार्यक्रमों का ताल्लुक वास्तविक जीवन से नहीं है। इसी के साथ बच्चे ऐसी संज्ञानात्मक रणनीतियाँ भी विकसित करने योग्य हो जाते हैं जो उन्हें सतर्क होकर मीडिया के संपर्क में आने की समझ देती है। पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों को कल्पनात्मक हिंसा पर आधारित कार्यक्रम से दूर रखने का प्रयास करना अति आवश्यक है।

अतः अभिभावकों के लिए यह अनिवार्य है कि वे ध्यान दें कि किस प्रकार की मीडिया से जुड़ी विषय-वस्तु बच्चों को आकर्षित करती है। अभिभावकों का यह हस्तक्षेप अनिवार्य है कि वे तय करें कि बच्चे किस प्रकार की विषय-वस्तु एवं कितना समय मीडिया (टी.वी.) को दें। बच्चों को मीडिया से जुड़ी पसंद एवं उसके प्रति समीक्षात्मक होना सिखाना आवश्यक है। ऐसा करना उन्हें मीडिया से होने वाले कई प्रकार के खतरों से संरक्षित कर सकता है।

शैक्षिक आशय

अनिवार्य है कि बालकों को मीडिया के प्रयोग से अवगत करवाया जाए ताकि वह तकनीकी समाज की जटिलताओं को समझ सकें, लेकिन अभिभावकों को एक सजग भूमिका का निर्वहन करना होगा। बच्चों के नैतिक एवं संवेगात्मक विकास में मीडिया की भूमिका की प्रभावशीलता को जानते हुए अभिभावकों को, मीडिया में क्या देखें, कितना देखें पर सकारात्मक नियंत्रण रखना चाहिए। विद्यालयों को मीडिया के सकारात्मक पहलुओं के संदर्भ में विद्यार्थियों को परिचित कराने के सार्थक प्रयास करने चाहिए। मीडिया का प्रयोग शिक्षण गतिविधियों में करना भी प्रभावी रहेगा, जिससे बच्चे इसके बेहतर प्रयोग को समझ सकेंगे। इस सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि तकनीकी भविष्य को बहुत हद तक तय करेगी। अतः नीति-निर्माताओं को भी इस संदर्भ में ज़्यादा असरदार एवं प्रयोगपूर्ण नीतियों का निर्माण करना चाहिए।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र को लेखक द्वारा किए गए शोध को आधार बनाकर लिखा गया है जो दर्शाता है कि मीडिया की भूमिका प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अहम भूमिका निभाती है, खासकर बच्चों के जीवन में। बालक मीडिया के साथ कितना समय बिताते हैं, के साथ-साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि वह क्या देखते हैं। अतः कितना से, क्या देखते हैं, कहीं ज़्यादा भूमिका निभाता है। बच्चों का नैतिक एवं संवेगात्मक विकास मीडिया की पहुँच से प्रभावित होता है। अवलोकन आधारित सीखना जैसे सिद्धांतों की सहायता से यह समझना आवश्यक है कि बच्चे जो अवलोकन करते हैं, उससे प्रभावित होते हैं। सही-गलत तय करने में यह एक आधार प्रधान करते हैं। कार्टून, फ़िल्मों एवं नाटकों आदि में नायक द्वारा की गई हिंसा को मीडिया द्वारा यथोचित ठहराना बच्चों के मनस पर नैतिक और अनैतिक होने को प्रभावित करता है। साथ ही संवेगों के प्रस्तुतीकरण एवं नियंत्रण करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। अतः आवश्यकता है कि बच्चों की मीडिया तक पहुँच को कैसे सुगम बनाया जाए जो अभिभावकों एवं शिक्षकों के प्रवेक्षण में कार्य करे। मीडिया तक बच्चों की अति पहुँच शायद लाभकारी सिद्ध न हो।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

गुंटर, बी. 1997. *चिल्ड्रन एंड टेलीविज़न*. दूसरा संस्करण. रटलेज, लंदन.

गोंटलेट, डी. 1995. *मूविंग एक्सपीरियंसिस — अंडरस्टैंडिंग टेलीविज़नस इंफ़्लूएंसिज़ एंड इफ़ेक्ट्स*. जॉन लिबी, लंदन.

बंदुरा, एल्बर्ट. 1997. *सोशल लर्निंग थ्योरी*. प्रेंटिस हॉल, एंगलवुड क्लिफ़्स, एन.जे.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2012. नेशनल पॉलिसी ऑन इंफ़ोर्मेशन एंड कम्युनीकेशन टेक्नोलॉजी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.

विक्टोरिया, राइडआउट और एलीज़ाबेथ, हेमल. 2006. द मीडिया फ़ैमिली — इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दन द लाइव्स ऑफ़ इंफेंट्स, टोड्लर्स, प्रीस्कूलर्स, एंड देयर पेरेंट्स. दी हेनरी जे. केसर फ़ैमिली फ़ाउंडेशन, वाशिंगटन डीसी.